







| विषय  | पृष्ठ |
|---|-------|
| दो सौ बाईस अध्याय   |       |
| रैवतक पर्वत पर उत्सव । अर्जुन और सुभद्रा की भेंट । अर्जुन का श्रीकृष्ण से सुभद्रा को पाने का प्रस्ताव ... ४७७ | ४७७   |
| दो सौ तेईस अध्याय   |       |
| सुभद्रा-हरण और इससे यादवों का क्रुद्ध होना ... ४७८  | ४७८   |
| दो सौ चौबीस अध्याय  |       |
| अर्जुन से सुभद्रा का व्याह ... ४८१  | ४८१   |
| दो सौ पच्चीस अध्याय   |       |
| जल-विहार ... ४८२  | ४८२   |
| दो सौ छब्बीस अध्याय   |       |
| खाण्डव-वन जलाने के लिए अग्नि की प्रार्थना ... ४८७   | ४८७   |
| दो सौ सत्ताईस अध्याय  |       |
| अर्जुन का अग्नि की प्रार्थना को स्वीकार करना ... ४९१  | ४९१   |
| दो सौ अठ्ठाईस अध्याय  |       |
| अग्नि से अर्जुन को धनुष आदि मिलना ... ४९२   | ४९२   |
| दो सौ उनतीस अध्याय  |       |
| डरे हुए देवताओं की प्रार्थना से इन्द्र का जल बरसाना ... ४९४   | ४९४   |

|   |     |
|---|-----|
| दो सौ तीस अध्याय  |     |
| इन्द्र के साथ अर्जुन और कृष्ण का युद्ध ... ४९६  | ४९६ |
| दो सौ इकतीस अध्याय  |     |
| आकाश-वाणी सुनकर इन्द्र का युद्ध रोकना ... ४९८   | ४९८ |
| दो सौ बत्तीस अध्याय   |     |
| मन्दपाळ ऋषि का उपाख्यान २०१   | २०१ |
| दो सौ तैंतीस अध्याय   |     |
| जरिता और उसके पुत्रों का संवाद ... २०३  | २०३ |
| दो सौ चौतीस अध्याय  |     |
| जरिता का पुत्रों को छोड़कर उड़ जाना ... २०४   | २०४ |
| दो सौ पैंतीस अध्याय   |     |
| अग्नि की स्तुति ... २०६   | २०६ |
| दो सौ छत्तीस अध्याय   |     |
| मन्दपाळ और जरिता का पुत्र के पास आना ... २०७  | २०७ |
| दो सौ सैंतीस अध्याय   |     |
| मन्दपाळ का पुत्रों को आश्वास देना । इन्द्र का अर्जुन को अस्त्र देना स्वीकार करना तथा कृष्ण और अर्जुन को वर देना ... २०८ | २०८ |

## रंगीन चित्रों की सूची ।

| विषय   | पृष्ठ | विषय   | पृष्ठ |
|--|-------|--|-------|
| १ अर्जुन का मरस्य-भेद ...  | ४१६   | गहने पहने सुन्दर लच्छणों-<br>वाली एक स्त्री हो गई ...  | ४७३   |
| २ अर्जुन और भीम का राजाश्रों<br>से युद्ध ...   | ४२२   | ७ चारों ओर फिरते-फिरते अर्जुन<br>ने अनेक गहनों से सजी हुई<br>वसुदेव की कन्या सुभद्रा को<br>एक जगह देखा ... | ४७५   |
| ३ इन्द्र उस स्त्री के पास गये<br>और पूछने लगे—भद्रे, तुम<br>कौन हो ? किसलिए रो<br>रही हो ? ... | ४३६   | ८ सुभद्रा-हरण ...  | ४७६   |
| ४ तिलोत्तमा के लिए सुन्द-<br>उपसुन्द की लड़ाई ...  | ४६७   | ९ यमुना-तट पर विहार-भूमि में<br>क्रीड़ा-कौतुक ...  | ४८६   |
| ५ नगर में विचरती हुई विशाङ्गदा<br>को अर्जुन का देखना ...                                       | ४७२   | १० खाण्डव-वन-दहन ...   | ४९५   |
| ६ जैसे अर्जुन उस ग्राह को<br>किनारे पर लाये वैसे ही वह<br>ग्राह का शरीर छोड़ कर सब             |       | ११ असुर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस<br>और नागगण का अर्जुन<br>और कृष्ण के साथ युद्ध ...                          | ४९७   |



